

## 1 Timothy

### 1 तीमुथियुस

१ पौलुस की तरफ़ से जो हमारे मुन्जी खुदा और हमारे उम्मीद गाह मसीह ईसा'के हुक्म से मसीह ईसा'का रसूल है, २ तीमुथियुस के नाम जो ईमान के लिहाज़ से मेरा सच्चा बेटा है: फ़ज़ल,रहम और इत्मिनान खुदा बाप और हमारे खुदावन्द मसीह ईसा' की तरफ़ से तुझे हासिल होता रहे । ३ जिस तरह मैंने मकिदुनिया जाते वक़्त तुझे नसीहत की थी,कि ईफ़िसुस में रह कर कुछ को शरूसों हुक्म कर दे कि और तरह की ता'लीम न दें, ४ और उन कहानियों और बे इन्तिहा नसब नामों पर लिहाज़ न करें,जो तकरार का ज़रिया होते हैं,और उस इंतज़ाम-ए-इलाही के मुवाफ़िक़ नहीं जो ईमान पर मब्नी है,उसीतरहअब भी करता हूँ । ५ हुक्म का मक़सद ये है कि पाक दिल और नेक नियत और बिना दिखावा ईमान से मुहब्बत पैदा हो । ६ इनको छोड़ कर कुछ शरूस बेहूदा बकवास की तरफ़ मुतवज्जह हो गए, ७ और शरी'अत के मु'अल्लिम बनना चाहते हैं, हालाँकि जो बातें कहते हैं और जिनका यक़ीनी तौर से दावा करते हैं,उनको समझते भी नहीं। ८ मगर हम जानते हैं कि शरी'अत अच्छी है,बशरते कि कोई उसे शरी'अत के तौर पर काम में लाए। ९ या'नी ये समझकर कि शरी'अत रास्तबाज़ों के लिए मुकर्रर नहीं हुई,बल्कि बेशरा' और सरकश लोगों, और बेदीनों, और गुनहगारों, और नापाकों, और रिन्दों, और माँ-बाप के क्रातिलों,और खूनियों, १० और हारामकारों,और लौंडे-बाज़ों,और बर्दा-फ़रोशों,और झूटों,और झूठी क़सम खानेवालों,और इनके सिवा सही ता'लीम के और बरखिलाफ़ काम करनेवालों के वास्ते है। ११ ये खुदा-ए-मुबारक के जलाल की उस खुशखबरी के मुवाफ़िक़ है जो मेरे सुपुर्द

हुई। १२ मैं अपनी ताकत बरूशने वाले खुदावन्द मसीह ईसा' का शुक्र करता हूँ कि उसने मुझे दियाननदार समझकर अपनी खिदमत के लिए मुक़रर किया। १३ अगरचे मैं पहले कुफ़्र बकनेवाला, और सताने वाला, और बे'इज़्जत करने वाला था; तो भी मुझ पर रहम हुआ, इस वास्ते कि मैंने बेईमानी की हालत में नादानी से ये काम किए थे। १४ और हमारे खुदावन्द का फ़ज़ल उस ईमान और मुहब्बत के साथ जो मसीह ईसा' में है बहुत ज़्यादा हुआ। १५ ये बात सच और हर तरह से कुबूल करने के लायक है कि मसीह ईसा' गुनहगारों को नजात देने के लिए दुनिया में आया, जिनमें सब से बड़ा मैं हूँ, १६ लेकिन मुझ पर रहम इसलिए हुआ कि ईसा' मसीह मुझ बड़े गुनहगार में अपना सब्र ज़ाहिर करे, ताकि जो लोग हमेशा की ज़िन्दगी के लिए उस पर ईमान लाएँगे उनके लिए मैं नमूना बनूँ। १७ अब हमेशा कि बादशाही या'नी ना मिटने वाली, नादीदा, एक खुदा की 'इज़्जत और बड़ाई हमेशा से हमेशा तक होती रहे। आमीन। १८ ऐ फ़र्ज़न्द तीमथियुस! उन पेशीनगोइयों के मुवाफ़िक़ जो पहले तेरे ज़रिए की गई थीं, मैं ये हुक्म तेरे सुपुर्द करता हूँ ताकि तू उनके मुताबिक़ अच्छी लड़ाई लड़ता रहे; और ईमान और उस नेक नियत पर कायम रहे, १९ जिसको दूर करने की वजह से कुछ लोगों के ईमान का जहाज़ ग़र्क हो गया। २० उन ही में से हिमुन्युस और सिकन्दर है, जिन्हें मैंने शैतान के हवाले किया ताकि कुफ़्र से बा'ज़ रहना सीखें।

## २

१ पस मैं सबसे पहले ये नसीहत करता हूँ कि मुनाजातें, और दू'आएँ और, इल्तिजायें और शुक्रगुज़ारियाँ सब आदमियों के लिए की जाएँ, २ बादशाहों और सब बड़े मरतबे वालों के वास्ते इसलिए कि हम कमाल दीनदारी और सन्जीदगी से चैन सुकून के साथ ज़िन्दगी गुज़ारें। ३ ये हमारे मुन्जी खुदा के नज़दीक 'उम्दा और

पसन्दीदा है। ४ वो चाहता है कि सब आदमी नजात पाएँ, और सच्चाई की पहचान तक पहुंचें। ५ क्योंकि खुदा एक है, और खुदा और इन्सान के बीच में दर्मियानी भी एक या 'नी मसीह ईसा' जो इन्सान है। ६ जिसने अपने आपको सबके फ़िदिये में दिया कि मुनासिब वक्तों पर इसकी गवाही दी जाए। ७ मैं सच कहता हूँ, झूट नहीं बोलता, कि मैं इसी ग़रज़ से ऐलान करने वाला और रसूल और ग़ैर-क़ौमों को ईमान और सच्चाई की बातें सिखाने वाला मुकर्रर हुआ। ८ पस मैं चाहता हूँ कि मर्द हर जगह, बग़ैर गुस्सा और तक़रार के पाक हाथों को उठा कर दुआ किया करें। ९ इसी तरह 'औरतें हयादार लिबास से शर्म और परहेज़गारी के साथ अपने आपको सँवारें; न कि बाल गूँधने, और सोने और मोतियों और क्रीमती पोशाक से, १० बल्कि नेक कामों से, जैसा खुदा परस्ती का इकरार करने वाली' औरतों को मुनासिब है। ११ 'औरत को चुपचाप कमाल ताबेदारी से सीखना चाहिये। १२ और मैं इजाज़त नहीं देता कि' औरत सिखाए या मर्द पर हुक्म चलाए, बल्कि चुपचाप रहे। १३ क्योंकि पहले आदम बनाया गया, उसके बाद हव्वा; १४ और आदम ने धोखा नहीं खाया, बल्कि 'औरत धोखा खाकर गुनाह में पड़ गई; १५ लेकिन औलाद होने से नजात पाएगी, बशर्ते कि वो ईमान और मुहब्बत और पाकीज़गी में परहेज़गारी के साथ क़ायम रहें।

### ३

१ ये बात सच है, कि जो शरूस् निगहबान का मर्तबा चाहता है, वो अच्छे काम की रूवाहिश करता है। २ पस निगहबान को बेइल्ज़ाम, एक बीवी का शौहर, परहेज़गार, खुदापरस्त, शाइस्ता, मुसाफ़िर परवर, और ता'लीम देने के लायक़ होना चाहिये। ३ नशे में शोर मचाने वाला या मार-पीट करने वाला न हो; बल्कि नर्मदिल, न तक़रारी, न ज़रदोस्त। ४ अपने घर का अच्छी तरह बन्दोबस्त करता हो, और अपने बच्चों को पूरी नर्मी से ताबे रखता हो। ५ (जब कोई अपने घर ही का बन्दोबस्त करना नहीं जानता तो खुदा कि

कलीसिया की देख भाल क्या करेगा?)| ६ नया शागिर्द न हो,ताकि घमण्डकरके कहीं इब्लीस की सी सज़ा न पाए। ७ और बाहरवालों के नज़दीक भी नेक नाम होना चाहिए,ताकि मलामत में और इब्लीस के फन्दे में न फँसे ८ इसी तरह ख़ादिमों को भी नर्म होना चाहिए दो जुबान और शराबी और नाजाएज़ नफ़ा का लालची ना हो ९ और ईमान के भेद को पाक दिल में हिफ़ाज़त से रखखें। १० और ये भी पहले आज़माए जाँएँ,इसके बा'द अगर बे गुनाह ठहरें तो ख़िदमत का काम करें। ११ इसी तरह'औरतों को भी संजीदा होना चाहिए;तोहमत लगाने वाली न हों,बल्किपरहेज़गार और सब बातों में ईमानदार हों। १२ ख़ादिम एक एक बीवी के शौहर हों और अपने अपने बच्चों और घरों का अच्छी तरह बन्दोबस्त करते हों। १३ क्यूँकि जो ख़िदमत का काम बख़ूबी अंजाम देते हैं,वो अपने लिए अच्छा मर्तबा और उस ईमान में जो मसीह ईसा' पर है, बड़ी दिलेरी हासिल करते हैं। १४ मैं तेरे पास जल्द आने की उम्मीद करने पर भी ये बातें तुझे इसलिए लिखता हूँ, १५ कि अगर मुझे आने में देर हो,तो तुझे मा'लूम हो जाएकिख़ुदा के घर,या'नी ज़िन्दा ख़ुदा की कलीसिया में जो हक़ का सुतून और बुनियाद है,कैसा बर्ताव करना चाहिए। १६ इसमें कलाम नहीं कि दीनदारी का भेद बड़ा है,या'नी वो जो जिस्म में ज़ाहिर हुआ,और रूह में रास्तबाज़ ठहरा,और फ़रिशतों को दिखाई दिया,और ग़ैर-क़ौमों में उसकी मनादी हुई,और दुनिया में उस पर ईमान लाए,और जलाल में ऊपर उठाया गया।

## ४

१ लेकिन रूह साफ़ फ़रमाता है कि आइन्दा ज़मानों में कुछ लोग गुमराह करनेवाली रूहों,और शयातीन की ता'लीम की तरफ़ मुतवज्जह होकर ईमान से फिर जाएँ। २ ये उन झूटे आदमियों की रियाकारी के ज़रिए होगा,जिनका दिल गोया गर्म लोहे से दागा गया है;। ३ ये लोग शादी करने से मना'करेंगे,और उन ख़ानों से परहेज़ करने का हुक्म देंगे,जिन्हें ख़ुदा ने इसलिए पैदा किया है कि ईमानदार

और हक के पहचानने वाले उन्हें शुक्रगुजारी के साथ खाएँ। ४ क्योंकि खुदा की पैदा की हुई हर चीज़ अच्छी है, और कोई चीज़ इनकार के लायक नहीं; बशर्ते कि शुक्रगुजारी के साथ खाई जाए। ५ इसलिए कि खुदा के कलाम और दु'आ से पाक हो जाती है। ६ अगर तू भाइयों को ये बातें याद दिलाएगा, तो मसीह ईसा' का अच्छा खादिम ठहरेगा; और ईमान और उस अच्छी ता'लीम की बातों से जिसकी तू पैरवी करता आया है, परवरिश पाता रहेगा। ७ लेकिन बेहूदा और बूढ़ियों की सी कहानियों से किनारा कर, और दीनदारी के लिए मेहनत कर। ८ क्योंकि जिस्मानी मेहनत का फ़ायदा कम है, लेकिन दीनदारी सब बातों के लिए फ़ाइदामन्द है, इसलिए कि अब की और आइन्दा की ज़िन्दगी का वा'दा भी इसी के लिए है। ९ ये बात सच है और हर तरह से कुबूल करने के लायक। १० क्योंकि हम मेहनत और कोशिश इस लिए करते हैं कि हमारी उम्मीद उस ज़िन्दा खुदा पर लगी हुई है, जो सब आदमियों का खास कर ईमानदारों का मुन्जी है। ११ इन बातों का हुक्म कर और ता'लीम दे। १२ कोई तेरी जवानी की हिक़ारत न करने पाए; बल्कि तू ईमानदारों के लिए कलाम करने, और चाल चलन, और मुहब्बत, और पाकीज़गी में नमूना बन। १३ जब तक मैं न आऊँ, पढ़ने और नसीहत करने और ता'लीम देने की तरफ़ मुतवज्जह रह। १४ उस ने'अमत से ग़ाफ़िल ना रह जो तुझे हासिल है, और नबुव्वत के ज़रि'ए से बुजुर्गों के हाथ रखते वक़्त तुझे मिली थी। १५ इन बातों की फ़िक्र रख, इन ही में मशगूल रह, ताकि तेरी तरक्की सब पर ज़ाहिर हो। १६ अपना और अपनी ता'लीम की ख़बरदारी कर। इन बातों पर क़ायम रह, क्योंकि ऐसा करने से तू अपनी और अपने सुनने वालों की भी नजात का ज़रिया होगा।

नसीहत कर; २ और जवानों को भाई जान कर, और बड़ी 'उम्र वाली' औरतों को माँ जानकर, और जवान 'औरतों को कमाल पाकीज़गी से बहन जानकर। ३ उन बेवाओं की, जो वाक़'ई बेवा हैं 'इज़्ज़त कर। ४ और अगर किसी बेवा के बेटे या पोते हों, तो वो पहले अपने ही घराने के साथ दीनदारी का बर्ताव करना, और माँ-बाप का हक़ अदा करना सीखें, क्योंकि ये ख़ुदा के नज़दीक पसन्दीदा है। ५ जो वाक़'ई बेवा है और उसका कोई नहीं, वो ख़ुदा पर उम्मीद रखती है और रात-दिन मुनाज़ात और दु'आ में मशगूल रहती है; ६ मगर जो 'ऐश-ओ-'इशरतमें पड़ गई है, वो जीते जी मर गई है। ७ इन बातों का भी हुक़म कर ताकि वो बेइल्ज़ाम रहें। ८ अगर कोई अपनों और ख़ास कर अपने घराने की ख़बरगीरी न करे, तो ईमान का इंकार करने वाला और बे-ईमान से बदतर है। ९ वही बेवा फ़र्द में लिखी जाए जो साठ बरस से कम की न हो, और एक शौहर की बीवी हुई हो, १० और नेक कामों में मशहूर हो, बच्चों की तरबियत की हो, परदेसियों के साथ मेंहमान नवाज़ी की हो, मुक़दसों के पाँव धोए हों, मुसीबत ज़दों की मदद की हो और हर नेक काम करने के दरपै रही हो। ११ मगर जवान बेवाओं के नाम दर्ज न कर, क्योंकि जब वो मसीह के ख़िलाफ़ नफ़स के ताबे'हो जाती हैं, तो शादी करना चाहती हैं, १२ और सज़ा के लायक़ ठहरती हैं, इसलिए कि उन्होंने अपने पहले ईमान को छोड़ दिया। १३ और इसके साथ ही वो घर घर फिर कर बेकार रहना सीखती हैं, और सिर्फ़ बेकार ही नहीं रहती बल्कि बक बक करती रहती है औरों के काम में दख़ल भी देती है और बेकार की बातें कहती हैं। १४ पस मैं ये चाहता हूँ कि जवान बेवाएँ शादी करें, उनके औलाद हों, घर का इन्तिज़ाम करें, और किसी मुख़ालिफ़ को बदगोई का मौक़ा न दें। १५ क्योंकि कुछ गुमराह हो कर शैतान के पीछे हो चुकी हैं। १६ अगर किसी ईमानदार' औरत के यहाँ बेवाएँ हों, तो वही उनकी मदद करे और कलीसिया पर बोझ न डाला जाए, ताकि वो उनकी मदद कर सके जो वाक़'ई बेवा हैं। १७ जो बुजुर्ग़ अच्छा

इन्तिज़ाम करते हैं,खास कर वो जो कलाम सुनाने और ता'लीम देने में मेंहनत करते हैं,दुगनी 'इज़्ज़त के लायक समझे जाएँ।<sup>१८</sup> क्योंकि किताब-ए-मुक़द्दस ये कहती है, “दाएँ में चलते हुए बैल का मुँह न बाँधना,”और मज़दूर अपनी मज़दूरी का हक़दार है।”<sup>१९</sup> जो दा'वा किसी बुजुर्ग के बरखिलाफ़ किया जाए,बग़ैर दो या तीन गवाहों के उसको न सुन।<sup>२०</sup> गुनाह करने वालों को सब के सामने मलामत कर ताकि औरों को भी ख़ौफ़ हो।<sup>२१</sup> खुदा और मसीह ईसा' और बरगुज़ीदा फ़रिश्तों को गवाह करके मैं तुझे नसीहत करता हूँ कि इन बातों पर बिला ता'अस्सूब'अमल करना,और कोई काम तरफ़दारी से न करना।<sup>२२</sup> किसी शख्स पर जल्द हाथ न रखना,और दूसरों के गुनाहों में शरीक न होना,अपने आपको पाक रखना।<sup>२३</sup> आइन्दा को सिर्फ़ पानी ही न पिया कर,बल्कि अपने मे'दे और अक्सर कमज़ोर रहने की वजह से ज़रा सी मय भी काम में लाया कर।<sup>२४</sup> कुछ आदमियों के गुनाह ज़ाहिर होते हैं,और पहले ही'अदालत में पहुँच जाते हैं कुछ बाद में जाते हैं।<sup>२५</sup> इसी तरह कुछ अच्छे काम भी ज़ाहिर होते है,और जो ऐसे नहीं होते वो भी छिप नहीं सकते।

## ६

<sup>१</sup> जितने नौकर जुए के नीचे हों,अपने मालिकों को कमाल 'इज़्ज़त के लाइक जानें, ताकि खुदा का नाम और ता'लीम बदनाम न हो।  
<sup>२</sup> और जिनके मालिक ईमानदार हैं वो उनको भाई होने की वजह से हक़ीर न जानें,बल्कि इस लिए ज़्यादातर उनकी ख़िदमत करें कि फ़ाइदा उठानेवाले ईमानदार और 'अज़ीज़ हैं तू इन बातों की ता'लीम दे और नसीहत कर।  
<sup>३</sup> अगर कोई शख्स और तरह की ता'लीम देता है और सही बातों को,या'नी खुदावन्द ईसा'मसीह की बातें और उस ता'लीम को नहीं मानता जो दीनदारी के मुताबिक़ है,  
<sup>४</sup> वो मगरूर है और कुछ नहीं जानता;बल्कि उसे बहस और लफ़्ज़ी तकरार करने का मर्ज़ है,जिनसे हसद और झगड़े और बदगोइयाँ

और बदगुमानियाँ,। ५ और उन आदमियों में रद्दो बदल पैदा होता है जिनकी अक्ल बिगड़ गई हैं और वो हक से महरूम है और दीनदारी को नफ़े ही का ज़रिया समझते है ६ हाँ दीनदारी सब्र के साथ बड़े नफ़े का ज़रिया है । ७ क्योंकि न हम दुनियाँ में कुछ लाए और न कुछ उसमें से ले जा सकते है। ८ पस अगर हमारे पास खाने पहनने को है,तो उसी पर सब्र करें। ९ लेकिन जो दौलतमन्द होना चाहते हैं,वो ऐसी आजमाइश और फन्दे और बहुत सी बेहूदा और नुक़सान पहुँचानेवाली ख़्वाहिशों में फँसते हैं,जो आदमियों को तबाही और हलाकत के दरिया में गर्क कर देती हैं। १० क्योंकि माल की दोस्ती हर क्रिस्म की बुराई की जड़ है, जिसकी आरजू में कुछ ने ईमान से गुमराह होकर अपने दिलों को तरह तरह के ग़मों से छलनी कर लिया । ११ मगर ऐ मर्द-ए-ख़ुदा!तू इन बातों से भाग और रास्तबाज़ी,दीनदारी,ईमान,मुहब्बत,सब्र और नर्म दिली का तालिब हो। १२ ईमान की अच्छी कुशती लड़; उस हमेशा की ज़िन्दगी पर क़ब्ज़ा कर ले जिसके लिए तू बुलाया गया था,और बहुत से गवाहों के सामने अच्छा इक्रार किया था। १३ मैं उस ख़ुदा को,जो सब चीज़ों को ज़िन्दा करता है,और मसीह ईसा' को, जिसने पुनितयुस पिलातुस के सामने अच्छा इक्रार किया था,गवाह करके तुझे नसीहत करता हूँ। १४ कि हमारे ख़ुदावन्द ईसा' मसीह के उस मसीह के आने तक हुक्म को बेदाग़ और बेइलज़ाम रख,। १५ जिसे वो मुनासिब वक़्त पर नुमायाँ करेगा,जो मुबारक और वाहिद हाकिम,बादशाहों का बादशाह और ख़ुदावान्दों का ख़ुदा है; १६ बक़ा सिर्फ़ उसी की है,और वो उस नूर में रहता है जिस तक किसी की पहुँच नहीं हो सकती,न उसे किसी इन्सान ने देखा और न देख सकता है; उसकी 'इज़ज़त और सलतनत हमेशा तक रहे।आमीन। १७ इस मौजूदा जहान के दौलतमन्दों को हुक्म दे कि मगरूर न हों और नापाएदार दौलत पर नहीं,बल्कि ख़ुदा पर उम्मीद रखें जो हमें लुत्फ़ उठाने के लिए



सब चीजें बहुतायत से देता है। १८ और नेकी करें, और अच्छे कामों में दौलतमन्द बनें, और सखावत पर तैयार और इम्दाद पर मुस्त'ईद हों,। १९ और आइन्दा के लिए अपने वास्ते एक अच्छी बुनियाद कायम कर रखें ताकि हकीकी जिन्दगी पर कब्ज़ा करें। २० ऐ तीमुथियुस! इस अमानत को हिफ़ाज़त से रख; और जिस'इल्म को इल्म कहना ही गलत है, उसकी बेहूदा बकवास और मुखालफित पर ध्यान न कर। २१ कुछ उसका इकरार करके ईमान से फिर गए हैं तुम पर फ़ज़ल होता रहे।

## उर्दू बाइबिल

The New Testament in the Urdu language, BCS 2017

copyright © 2017 Bridge Connectivity Solutions

Language: उर्दू (Urdu)

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution Share-Alike license 4.0.

You have permission to share and redistribute this Bible translation in any format and to make reasonable revisions and adaptations of this translation, provided that:

You include the above copyright and source information.

If you make any changes to the text, you must indicate that you did so in a way that makes it clear that the original licensor is not necessarily endorsing your changes.

If you redistribute this text, you must distribute your contributions under the same license as the original.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

Note that in addition to the rules above, revising and adapting God's Word involves a great responsibility to be true to God's Word. See Revelation 22:18-19.

2017-11-27

---

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 27 Sep 2019 from source files dated 27 Sep 2019

bb64bcb8-2153-5c47-9a6f-7f45fece3c84